ISSN: 2584-0231(Online)
International Journal of Multidisciplinary Research in Arts, Science and Technology
© IJMRAST | Vol. 3 | Issue 3 | March 2025
Available online at: https://ijmrast.com
DOI: https://doi.org/10.61778/ijmrast.v3i3.137

भारतीय हिंदी एनीमेशन फिल्मों में पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव

डॉ. अंजली त्यागी

असिस्टेंट प्रोफेसर, गृह विज्ञान विभाग, श्री अग्रसेन कन्या पी०जी० कॉलेज वाराणसी

Email: anjalityagi66@gmail.com

शोध सार –

यह शोध पत्र वर्तमान भारतीय एनिमेशन सिनेमा में निर्मित हो रही पौराणिक फिल्मों का विश्लेषण करने का प्रयास है। आज का दौर आधुनिकीकरण का दौर है । इस आधुनिक समय में भारतीय जन–मानस अपनी परंपरा, संस्कृति और ज्ञान की अपेक्षा पाश्चात्य संस्कृति की ओर अधिक अग्रसर है, जिसका प्रभाव सिनेमा में परिलक्षित होता है। वर्तमान एनिमेशन सिनेमा में पौराणिक विषयों से प्रेरित फिल्मों का निर्माण अधिक मात्रा मे किया जा रहा है । ये फिल्में पारंपरिक महाकाव्यों, पौराणिक कथाओं, पात्रों और रूपांकनों को सरल, समझने योग्य और आकर्षक ढंग से पुनर्निर्मित और प्रस्तुत करती है । इन एनिमेटेड फिल्मों के माध्यम से बाल व युवा वर्ग को अपनी सांस्कृतिक जड़ों से परिचित कराया जा रहा है । यह एनीमेशन सिनेमा बच्चों के अतिरिक्त बड़ों को भी अपनी ओर आकर्षित कर रहा है। एनीमेशन सिनेमा ने व्यक्ति के मन की कल्पनाओं को रचनात्मक ढंग से प्रस्तुत करने का कार्य किया है। प्रस्तुत शोध पत्र में एनीमेशन फिल्मों में अंतरनिहित विषयों, चरित्रों, संदेशों, संवाद, कला एवं तकनीक पर पाश्चात्य सिनेमा के प्रभावों को जानने का प्रयास किया जा रहा है साथ ही साथ यह भी समझने का प्रयास किया जा रहा है कि इस तरह के चित्रण बच्चों की पौराणिक कथाओं , संस्कृति और मूल्य प्रणाली की समझ को किस प्रकार प्रभावित कर रहे हैं।

की–वर्ड्स: सिनेमा, एनीमेशन, पुराण, महाकाव्य, परंपरा, संस्कृति, नैतिक मूल्य, ज्ञान, वीएफएक्स ।

परिचय -

एनीमेशन का नाम सुनते ही हमारे मन में एक कौतूहल उत्पन्न होता है जिससे हमारे मन में अनेक मनोरंजनात्मक विचार उत्पन्न होते है। जिन्हें हम कार्टून कहते हैं, जो हमें सहज ही बचपन की अनुभूति कराते हैं । एनीमेशन बहुत समय से कहानी को आकर्षक ढंग से कहने व प्रदर्शित करने के एक शक्तिशाली माध्यम के रूप में जाना जाता रहा है। इन एनिमेटेड फिल्मों में कल्पनाशक्ति, रचनात्मकता एवं दृश्यों को कलात्मक ढंग से प्रस्तुत करने की क्षमता ने सभी आयु वर्ग के दर्शकों को अपनी ओर आकर्षित

करने का प्रयास किया है। वर्तमान समय में भारतीय हिंदी सिनेमा में एनिमेटेड फिल्मों का उद्योग बहुत ही तीव्र गति से विकसित हुआ है । देश की महानतम सांस्कृतिक विरासत और पौराणिक कथाओं को प्रदर्शित करने वाली कहानियां और उनके पात्रों को अधिक से अधिक प्रदर्शित किया जा रहा है । इन फिल्मों का मुख्य उद्देश्य एक विशेष आयु वर्ग के लोगों को मनोरंजन प्रदान कर शिक्षित करना और उनके मध्य सांस्कृतिक व नैतिक मूल्यों को स्थापित करना है।

एनीमेशन प्रक्रिया एक ऐसी कला है जहां बहुत सारे चित्रों को कार्यशैली व संवेदनाओं के अनुरूप निर्मित किया जाता है । इन सभी चित्रों को क्रमबद्धता के साथ वीडियो बनाकर उन्हें चलाया जाता है जिससे दर्शकों को चित्रों के चलने का दृष्टि भ्रम उत्पन्न होता है। यह कला, चित्रण एवं तकनीकी का एक ऐसा मिश्रित रूप है जिससे सजीवता उत्पन्न होती है। भारतीय सिनेमा में एनीमेशन की शुरुआत 20वीं सदी के प्रारंभ में 1917 में स्टॉप मोशन फिल्म अगकाडयांची मौज से हुआ । इसके बाद चांदनी रात 1934, लफंगा लंगूर 1935, सुपरमैन्स मिथ 1939, द बनयान डियर 1957 जैसी फिल्में आई। द बनयान डियर फिल्म में पारंपरिक भारतीय मूल्यों करुणा, अहिंसा, सहनशीलता, प्रेम, त्याग और विश्वास को दिखाने का प्रयास किया गया । इसके पश्चात तकनीकी व शैक्षिक विकास के अंतर्गत एक अनेक और एकता 1974 , गायब आया 1986, पांडव द फाइव वॉरियर्स 2000 , जैसी अनेक एनीमेटेड फिल्में समय समय पर आती रहीं। सामान्यतः एनीमेशन का निर्माण बच्चों को ध्यान में रखकर किया जाता है । भारत में बहुतायत मात्रा में एनिमेशन फिल्मों का निर्माण होता रहा है जिसका मुख्य उद्देश्य बच्चों को मनोरंजन व इसके माध्यम से शिक्षा प्रदान करना रहा है। आधुनिक समय में यह सिनेमा केवल बच्चों तक सीमित नहीं है इसने देश के सभी आयु वर्ग के लोगों को आकर्षित किया है । आजकल एनीमेशन का प्रयोग शिक्षा, चिकित्सा, वास्तुकला, वेब डिजाइनिंग और मनोरंजन विशेष कर फिल्मों में किया जा रहा है।

भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम संस्कृतियों में से एक है, इस सनातन संस्कृति मे रामायण व महाभारत जैसे महाकाव्यों व पौराणिक ग्रंथों को संस्कृति के आधार के रूप में परिकल्पित गया है। यह वह समय था जब विश्व की अधिकांश सभ्यताओं का जन्म भी नहीं हुआ था और न ही उन्होंने विकसित स्वरूप को प्राप्त किया था। एनिमेटेड हिंदी सिनेमा ने इन महान महाकाव्यों व पौराणिक कथाओं के पात्रों के विचारों , मूल्यों व आदर्शों को दुनिया के समक्ष लाने का प्रयास किया है । जिससे लोगों को भारतीय धर्म ग्रंथो,पौराणिक कथाओं एवं उनके चरित्रों के द्वारा समाज को अपनी जड़ों से परिचित कराया जा सके । बाजारवाद के इस समय में कोई भी समाज किसी अन्य समाज व संस्कृति को प्रभावित करने के साथ–साथ स्वयं भी प्रभावित होता है। यही बातें हिंदी एनीमेटेड सिनेमा व फिल्मों में परिलक्षित होती है। वर्तमान में निर्मित हो रही एनिमेटेड फिल्मों के पात्रों का चित्रण, संवाद, कथा–वाचन शैली इत्यादि पर तकनीकी प्रभाव बहुत हद तक दिखाई देता है –

चरित्र डिजाइन पर प्रभाव –

2005 में निर्मित फिल्म हनुमान जो कि अपने समय की सफलतम फिल्म थी । इस फिल्म मे डिज्नी व पिक्सर स्टाइल की भांति बाल हनुमान को गोल चेहरेय मोटी, बड़ी व चमकदार आंखों एवं मनमोहन भावों के साथ चित्रित किया गया । इसी प्रकार 2009 में आई फिल्म लिटिल कृष्णा के चेहरे को जापानी एनीमेशन पात्र डोरेमोन नारूतो के प्रतिरूप में पतली कमर , बड़े नेत्रों के साथ प्रदर्शित किया गया । बाल गणेश फिल्म में बालक गणेश को टीवी चौनल में आने वाले कार्टून जैसे दिखने वाले पात्रों के रूप में चित्रित किया गया । इन फिल्मों मे विभिन्न पात्रों के मध्य हो रहे द्वंद को भी कार्टून चरित्र की तरह प्रदर्शित किया गया ।

संवाद प्रस्तुति पर प्रभाव –

विदेशी चरित्रों व एनिमेटेड फिल्मों में दिखाई जा रहे भावनात्मक दृश्यों को नाटकीय व हास्यास्पद रूप मे प्रदर्शित किया जा रहा है । वास्तविक भारतीय पौराणिक कथाएं ,संवाद व उद्देश्य की दृष्टि से हमेशा बहुत गंभीर एवं विचारशील रहे हैं। वर्तमान में संवादों का सरल प्रस्तुतीकरण हो रहा है।

कथानक व सुपर हीरो का प्रभाव –

भारतीय पौराणिक पात्रों को पाश्चात्य देशों में प्रचलित डीसी कॉमिक्स, मार्वल कॉमिक्स में प्रचलित सुपर हीरोज के रूप में प्रदर्शित करने का प्रयास किया जा रहा है । हनुमान वर्सेस महिरावण 2018 व महाभारत में हनुमान, अर्जुन, भीम आदि पौराणिक पात्रों को लंबी–चौड़ी छाती वाले बाजू व मसल्स के साथ बलशाली रूप में चित्रित किया गया है जबकि भारतीय पौराणिक पात्र स्वयं में ही ईश्वर या ईश्वर के प्रतिरूप रहे हैं जो की असीमबल व अलौकिक शक्तियों के स्वामी है । ये सामान्यतः विनोदी, शांत व कोमल स्वभाव के ही रहे हैं तथा उन्होंने अपनी शक्तियों को विषम परिस्थितियों व संकट के समय ही रौद्र रूप में प्रकट किया है । फिल्मों में देवताओं को सुपर हीरोज व राक्षसों को खलनायक के रूप में दिखाया जा रहा है।

तकनीकी प्रभाव –

आधुनिक एनिमेटेड फिल्मों में कंप्यूटर जेनरेटेड इमेजिनरी एवं विजुअल इफेक्ट्स , वीएफएक्स का बहुत अधिक प्रयोग किया जा रहा है । देवताओं के अवतार , द्वंद व युद्ध के दृश्यों में उपरोक्त तकनीकियों का सफलतापूर्वक प्रयोग किया जा रहा है । दिव्य शक्तियों का चित्रण करते समय तीव्र मूवमेंट या स्लो मोशन आदि तकनीकों का प्रयोग भी किया जाता है।

विश्लेषण –

भारतीय एनिमेटेड फिल्मों में विदेशी सिनेमा की प्रदर्शन शैली का गहरा प्रभाव दिखाई देता है । नवीन तकनीकी प्रयोग के माध्यम से फिल्मों को अधिक रोचक व आकर्षक बनाने का प्रयास किया जा रहा है । बढ़ते बाजारवाद व आधुनिकीकरण का प्रभाव एनिमेटेड फिल्मों में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

फिल्मों की कहानियां व उनके पात्र पुराणों व महाकाव्यों पर आधारित तो होते हैं परंतु कहानियों की मौलिकता में कुछ परिवर्तन करते हुए उनके चरित्रों के शारीरिक गठन में कलात्मक एवं रचनात्मक परिवर्तन करते हुए विजुअल आर्ट्स के द्वारा उन्हें सुपर हीरो की भांति दिखाया जाता है। इसका मुख्य उद्देश्य दुनिया के विभिन्न देशों में बैठे हुए दर्शकों को आकर्षित करते हुए अधिक से अधिक धन कमाना है । एनीमेशन ने भारतीय व विदेशी बाजारों में अच्छी पहचान बना ली है जिसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बहुत सराहना प्राप्त हुई है । एनीमेशन के द्वारा भारतीय संस्कृति के पुराणों व महाकाव्यों को दुनिया के सामने लाने तथा इसके माध्यम से हर आयु–वर्ग के लोगों को उससे परिचित कराने का अच्छा माध्यम प्राप्त हुआ है । परंतु दूसरी ओर भारतीय दर्शन के मूल उद्देश्यों धर्म ,मोक्ष, आत्मज्ञान को बहुत सतही स्तर पर दिखाया जा रहा है जिससे उचित भारतीय मूल्य लोगों तक नहीं पहुंचे पा रहे हैं और दुनिया भर के दर्शक इन भारतीय मूल्यों से लाभान्वित नहीं हो पा रहे हैं। भारतीय एनिमेटेड फिल्मों ने समाज में शैक्षिक भूमिका भी निभाई है। बच्चों में नैतिक मूल्यों, देशप्रेम और सांस्कृतिक गौरव की भावना को सशक्त करने में इन फिल्मों का योगदान उल्लेखनीय है। 'छोटा भीम', 'हनुमान रिटर्न्स', 'बाल गणेश' जैसी फिल्में केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं बल्कि बाल मनोविज्ञान के अनुरूप शिक्षण का एक सशक्त उपकरण सिद्ध हुई हैं। इनमें निहित संदेश बच्चों को साहस, निष्ठा, कर्तव्य और करुणा जैसे मूल्यों से परिचित कराते हैं। परंतु जब इन फिल्मों में विदेशी शैलियों के पात्र या हास्यप्रद संवाद जोड़ दिए जाते हैं, तो उनका शैक्षिक प्रभाव सतही बन जाता है, जिस कारण भारतीय कथाओं की गहराई कहीं खो–सी जाती है। अतः आवश्यक है कि फिल्म–निर्माता इन मूल्यों को जीवंत रखने के साथ मनोरंजन और सिक्षा के मध्य संतुलन बनाए रखें

भारत का एनीमेशन उद्योग वर्तमान में बहु–अरब डॉलर का क्षेत्र बन चुका है। 3D, CGI , VFX और मोशन–कैप्चर तकनीकों के विकास ने इसे वैश्विक प्रतिस्पर्धा में ला खड़ा किया है। विदेशी कंपनियाँ भारतीय तकनीशियनों को अपनी परियोजनाओं के लिए चुन रही हैं, जिससे भारतीय युवाओं को नए रोजगार अवसर प्राप्त हो रहे हैं। 'ग्रीन गोल्ड एनिमेशन', 'टूनज इंडिया', DQ एंटरटेनमेंट' जैसी स्टूडियो कंपनियों ने अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भारत की पहचान स्थापित की है। किंतु इस तकनीकी सफलता के साथ–साथ यह भी ध्यान रखना चाहिए कि आर्थिक लाभ की होड़ में सांस्कृतिक सार का क्षरण न हो। यदि तकनीकी उत्कृष्टता के साथ भारतीय दार्शनिकता का संयोजन किया जाए, तो भारतीय एनिमेशन विश्व को नई दिशा दे सकता है। सरकार और निजी क्षेत्र को मिलकर ऐसे प्रयास करने चाहिए कि भारतीय एनीमेशन फिल्मों में पौराणिक व सांस्कृतिक विषयों पर आधारित मौलिक कहानियों का निर्माण बढ़े। शैक्षिक संस्थानों में एनीमेशन को एक रचनात्मक विषय के रूप में सम्मिलित किया जाए, जिससे नई पीढ़ी तकनीक के साथ भारतीय परंपरा का समन्वय कर सके। विदेशों की तरह भारत में भी 'नेशनल एनिमेशन मिशन' जैसी पहल की आवश्यकता है जो स्थानीय कलाकारों को प्रशिक्षण और आर्थिक सहयोग प्रदान करे। भविष्य में यदि भारतीय फिल्म–निर्माता मनोरंजन के साथ अध्यात्म और दर्शन को जोड़ने में सफल होते हैं, तो एनीमेशन सिनेमा न

केवल सांस्कृतिक पहचान को संरक्षित करेगा बल्कि वैश्विक स्तर पर भारत की वैचारिक श्रेष्ठता को भी प्रमाणित करेगा।

उपसंहार –

निःसंदेह एनिमेटेड सिनेमा ने भारतीय पौराणिक मूल्यों को दुनिया के सामने लाने में बहुत बड़ी भूमिका अदा की है लेकिन साथ ही साथ कुछ चुनौतियां भी सामने आई है । विदेशी चरित्रों के प्रभाव ने मौलिक भारतीय संस्कृति को पीछे छोड़ दिया है। पारंपरिक भारतीय सौंदर्य व धार्मिक गंभीरता में कमी आई है। अत्यधिक आकर्षक, मनोरंजनात्मक बनाने के लिए मूल शैक्षिक व आध्यात्मिक विचारों पर ध्यान नहीं दिया जा रहा है जो कि मूल भारतीय संस्कृति के प्रमुख उद्देश्यों को पूरा नहीं करता है । इसलिए यह अत्यावश्यक है कि हम भले ही विदेशी शैली एवं तकनीक को अपनायें परंतु पात्रों का प्रदर्शन , उनके संवाद और कथा वाचन शैली को शालीन व शैक्षणिक बनाए रखा जाए जिससे दुनिया को भारतीय महाकाव्यों व पुराणों की मूल शिक्षाओं से परिचित कराया जा सके। भारतीय संस्कृति व धर्म को जीवित रखते हुए दुनियाभर में इन एनिमेटेड फिल्मों को पहुचाया जाना चाहिए ताकि सम्पूर्ण विश्व को इनकी अवधारणाओं से लाभान्वित किया जा सके और वसुधैव कुटुंबकम की भावना को मूर्त रूप प्रदान किया जा सके ।

References

[1]. https://share.google/Pwrjs8fOc93W55PXc

[2]. https://share.google/JbdA7jn6yv6CyarKM

[3]. https://oldjournal.animationstudies.org/sandeep-ashwath-mythical-past-animated-present/

[4]. https://www.swarthmore.edu/film-media-studies/bridging-cultures-through-animation-exploring-tension-and-intersection-east-asian

[5]. https://hound-studio.com/blog/the-impact-of-globalization-on-the-animation-industry/

[6]. https://www.socreate.it/hi/blog/patakatha-lekhan/sanskriti-aur-charitra-pashchim-aur-purv-mein-kahani-kahne-kee-kala-mein-antar

[7]. https://www.socialresearchfoundation.com/upoadreserchpapers/3/318/191130105314aditi%20swami.pdf

Cite this Article

डॉ. अंजली त्यागी , "भारतीय हिंदी एनीमेशन फिल्मों में पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव", International Journal of Multidisciplinary Research in Arts, Science and Technology (IJMRAST), ISSN: 2584-0231, Volume 3, Issue 3, pp. 58-62, March 2025.

Journal URL: *https://ijmrast.com/*

DOI: *https://doi.org/10.61778/ijmrast.v3i3.137*

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License.